als einen ihm zukommenden Theil für sich nehmen: यस्य यत्पैतकं प्रि-क्यं स तहह्तीत नेतरः M. 9, 162. 191. वध्यवासीसि मृह्तीयुः 10,56. न क-न्यायाः पिता विद्वान्गृङ्कीयाच्क्रूल्जमएवपि M. 3,51. 9,98. ये कार्यिकेभ्यो ऽर्घ मेव गृह्णीयः ७,१२४. म्रशीतिभागं गृह्णीयान्मासाद्वार्डुषिकः शते ८,१४०.६४८. स्वदेशपएये तु शतं वरिएरगृह्णीत पञ्चकम् Jåढंर्र. २,२५२. यस्तु बलां गृह्णाति पार्थिव: М. 9,254. Ragn. 1,18. ऋस्माभि: — गृक्तीतमेतत्सर: Раккат. 175, 11. 227, 8. — 6) gewinnen, erlangen, erhalten: तं में जग्रभ म्राशसी नविष्ठं दोषा वस्तोर्क्वमानास इन्द्रम् १९४. ५,३२,११. नार्कं गृभ्णानाः संकृतस्य लोके VS. 15, 50. किं ते ब्रह्माणी गुरुते सर्वायः RV. 5, 32, 12. म्राष्ट्रयः पालं गृभ्णाति setzen Frucht an TS. 6,3,4,3. खुतिमग्रक्तीद्रक्रगण: Çi,. 9, 23. (त्रया) ग्राह्मिश्च सम्त्रति: Вилтт. 19, 29. — 7) entgegennehmen, emplangen, annehmen: म्रात्मने। वृत्तिर्मान्वच्कुन्गृङ्खीयात्साध्तः सदा M. 4,252. गृह्णीघ पिठरं तामं मया दत्तम् MBs.3,202. इदं मयोग्यतं तुभ्यं पायसं गृद्ध प्राप्त R. 3,63,18.26. 1,1,38. पितरे। ४पि न गृह्णति तदत्तं सलिला-र्ज्ञालम् Pankat. II, 111. इदं स्वर्णकङ्कणं गृह्यताम् Hit. 10,9. Çik. 8, 13. V 10. 111. तां स्वधर्मेण धर्मज्ञ स्नुपार्धे तं गृकाण मे мвн. 3,16698. प्रत्या-ख्याय प्रा राज्यं न स जात् ग्रक्तीर्प्यात 1,5660. R. 2,79,5. तस्मान्जरां न ते — यक्तिष्ये MBs. 1,3470.3473. सा गर्भे धत्राष्ट्राद्यायकीत् concepit 4490. अयं विष्टरे। गृह्यताम् VIKK. 86,15. परिषद्भिमिनं तावत्त्रीतिदायं गृहाणा मे R. 3,21,28. सम्यगभिषेकमगृह्धत Mirk. P. 19,20. मध्ये — दुर्वतानामपि वसन्नपि । म्रनतिक्रासवात्यो ऽपि डःसंस्कारान सा ऽग्रक्तित् nahm keine bösen Gewohnheiten an Riga-Tar. 5,228. म्राज्ञाम्, म्रादेशम्, संदेशं ग्रत्ह eine Anordnung, einen Befehl entgegennehmen, empfangen Milav. 3. Ragh. 12,7. Pankat. 69,13. Bhag. P. 4,30,11. Çak. 53,17. Angeblich mit doppeltem acc.: डाग्राक् पद्मना भाड्यम् Vor. 5, 6. — 8) durch Kauf an sich bringen, mit dem instr. des Preises: विक्रयाची धर्न किं-चिह्न्सीयात्क्लमंनिधी М. 8,201. มิงัด์ง. 2,169. गवां शतमक्स्रिया श्नाःशेफां तता नृपः । गृङ्गिता पर्मप्रीता जगाम R. 1,61,21. ततम् तेनाजादयम्हं ग्रक्तीच्ये Pankar. 232, 14. कियता मूल्येनैतत्प्स्तकं गृक्तीतम् 127, 12.9. 14. - 9) sich erwählen, sich erbitten: न रत्तसाम्। वध्यः स्यामिति ज्ञायाक् वरं बत्तः MBs. 13,4020. स्थितिं च धर्मे जयाक् तस्मात् 2342. पुत्रं वंशक-र्म् — जमारू R.1,39,13.14. — 10) auffassen (eine Flüssigkeit), schöpfen: म्रपस्फ्रं गृभायत सामामन्द्रीय पातंबे ९४. 8,58,10. मद्ग्रा (so zu lesen) हव वो यहा गृह्याते P. 3,4,8,8ch. यहानगृह्धीम: Çat. Ba. 4,6,5,1.5. 1,1,2,7. TS. 6,4,2,2. 3,1. VS. 10,1. TBR. 1,3,2,2. Kâtı, ÇR. 3,3,17. ग्रहे ग्रही-ष्ये सामस्य यज्ञे वाम् Butc. P. 9,3,12. MBu. 1,5900. — 11) auffangen: जयारु प्रसमं तानि सर्व।एयस्त्राणि मे 🗛 🕳 3,33. Vgl. u. प्रस्. — 12) pflücken, abpflücken: प्रियंत्रदा नाखेन सुमनसो गृह्णाति Çir. 48,20. सर्वीमवलम्ब्य स्विता चूताङ्करं गृह्णाति 78,8. sammeln: गृह्णत्तः सर्वर् लानि र लदीपाने-वासिन: Habiv. 3238. — 13) einsammeln, sich einen Vorrath von Etwas machen Varan. Ban. S. 41 (40), 10.11. - 14) Etwas in Gebrauch nehmen, anlegen (Kleider u. s. w.): मेखलामितनं द्राउम्पवीतं कमएउलुम् । स्रप्तु प्रास्य विनष्टानि गृह्णीतान्यानि मस्त्रवत् ॥ M.2,64. वासंसि जीर्णानि यया विकाय नवानि गृङ्खाति नरे। ऽपराणि Виль. 2,22. गते पितरि सर्वाणि संन्यस्याभर् णानि सा । जग़रे वल्कलान्येव वम्बं काषायमेव च ॥ мви. 3, 16708. श्राचार इत्यविहतेन मया गृहीता या वेत्रयष्टिर्वराधगृहेषु राज्ञः Çin. 100. जगरे पाम्बं द्रपम् er nahm die Gestalt des Purusha an Buig. P. 1,3,1. - 13) nehmen und auf Etwas legen, setzen, in Etwas stecken:

शिराभिस्ते गृङ्गिवार्वीम् Erde auf den Kopf legend M. 8,256. तता बस्त्रा-ञ्चलात्तस्य सः — तान् । जग्राक् सर्षपान्कस्ते तामङ्के च नपात्मशाम॥ v.p.113. म नामिकाः। तेषां चकर्त बड्डा च कृती ब्रग्नाक् वाप्तास 83. - 16) in sich hineinziehen: पर्वार्णनाभि: मृजले गृह्वले Munp. Up. 1,1,7; vgl. Bulg. P. 3, 21,19. in sich begreisen, in sich schliessen: म्रकारः सवर्णाग्रहणेन म्रा-कारमपि यथा गृह्णीयात P. 8,4,68,Sch. Vop. 1, 3. — 17) Etwas auf sich nehmen, sich einer Sache hingeben, - unterziehen, sich an Etwas machen: धृतिं गृह्णीतम् MBa. 3, 15107. उपवासं त् गृह्णीयाखद्दा संकल्पपेद-तम् 13,6024. मया मङ्ग्रितमगृद्धात Karais. 2,14. गृङ्गीतमान 7,1. गृङ्गी-तमानत्रत Baig. P. 5,5,29. तङ्खतामतिविधर्मः Pankat. 35, 17. म्रात्मचि-की िषेतस्य संपादनाय स्तरं। जगुद्धः प्रयत्नम् Катийя. 15,149. श्रेपेंासं दत्तं मर्नेसा जग्न्यात् er sasse bessere Vorsätze RV. 10, 31, 2. मेव्हाइक्तिम-ব্রান্থানু Beag. 16, 10. — 18) Jmd aufnehmen, willkommen heissen, insbes. eine verstossene Gattin wieder aufnehmen: गुरुति। ऽनन्यभावेन प-त्रया कृरिरोश्चरः B#AG. P.3,5,19. ततः सीतां मक्।भागामूर्मितां च पशस्त्रि-नीम्। क्राधतस्ते चामे तग्रङ्गन्यपत्नयः॥ R. 1,77, 11. गृक्गणेमाम् — त्रया विश्रेशिता कीयं भर्तारं नाधिगद्दक्ति MBH. 5,7068. R. 1,1,82. Çik. 122. - 19) in den Mund nehmen, anführen, nennen (den Namen): Hवासा-मयभं नामं RV. 1,191,13. 10,145,4. AV. 6,82,1. 83,2. TS. 1,5,8,5. ÇAT. Ba. 1,9,8,21. म्रताविति नाम गृह्णाति 14,9,4,11. न तु नामापि गृह्णीया-त्पत्या प्रेते परस्य तु M. 5,157. गुद्धणां नाममात्रे ४पि गृहोते Райкат. III. 78. नामग्राङ्म् mit Nennung des Namens, namentlich Çat. Br. 8,3,1,14. 9,1,1,24. 4,2,25. Katulis. 24,219. — 20) mit den Sinnen fassen, gewahrwerden, vernehmen, erkennen: न चत्पा ग्रह्मते नापि वाचा नान्यै-र्दे वैस्तपसा कर्मणा वा Мирр. Up. 3,1,8. चतुषा गृह्यते ह्रपम् P. 4,2,92, Sch. तिलेषु तैलं द्धिनीय सर्पिरापः स्नातःस्वरणीषु चाग्निः । एवमात्मिन गृह्यते ४सी (देव:) Çveriçv. Up. 1, 15. गृङ्गितश्चापदमरूगयम् (v. 1. ०पदप्र-चारमर्°) ausgespürt Çîk. 23,11. जागृभा हरम्रीदिशं ब्रोकमिहै: R.V. 1, 139, 10. Çat. Ba. 14,5,4,7. ज्यानिनार्मय गृह्धती Rage. 11, 15. येन प्रण-म्य तस्या ऋशिर्वादं गृह्णामि Pankar. 208, 7. गृङ्गीतं ब्राह्मणावच: ich habe die Worte des Br. vernommen so v. a. nehme dieselben als gute Vorbedeutung an Çîk. 7,8,v.l. गुरुति। ८वं जयशब्द: Mudr. 17, 12. मर्नमा य-दर्यशीत् १.४. 1,145,2. म्रग्ने ब्रह्म गृभ्णोघ vs. 1,18. नेत्रवत्नाविकारिश्च ग्-ह्यते ऽसर्गतं मनः M. 8,26. न तत्र देापं ग्रक्टीप्यति er wird darin kein Unrecht sehen Çik. 40.5. Bei den Astronomen beobachten Vanan. Bau. S. 42 (43), 30. 83, 6. 24. fgg. — 21) erlernen, im Gedächtniss behalten: देकि विखामिमा मम । मत्ता अपि चाश्चक्टर्यं गृकाण N. 20,21.23. 25.15. मलयामं गृङ्गण वम् R. 1,24,12. गृङ्गीवा ते हे गावे 62,21. म्रस्नमस्नम् Ragu. 5, 59. उदीरिता ऽर्थः पशुनापि गृह्यते Райкат. 1, 49. मासमधीती उन्चाका उनेन न गृकीत: P. 2,3,6,Sch. 4,4,39. सक्द्रक्तगृकीताय (लेख-का) Kin. 104. मज़ड़ के न गृह्माति Pankar. 11,177. Katuis. 2,80. — 22) annehmen, billigen, gutheissen: एवमस्त्रित तं प्राङ्कर्शगृङ्घः समयं च तन् MBแ. 1,6299. पर्यं कित्त्विपाद्भेर: कृतो ऽप्येवं न गृह्यते R. 2,23,14. क्र-लमत्र न गृह्यते Мякки. 143,24. तत्तवेत्यग्रहोद्धद्या Vid. 32. भत्रया युतग्-क्रीतया Bulic. P. 1,2,12. — 23) annehmen, beherzigen, befolgen: न गृक्ति वे मया (वच:) MBu. 2,2709. 3, 294. 295. 608. 10281. 16496. R. 3,45. 19. 46, 20. 4, 14, 32. 5.88, 12. 20. 25. 6, 93, 14. MRKKU. 131, 13. Bulg. P. 4, 9, 32. लोको ऽयकोध्यर्यभस्य कि तत्प्रमाणम् 3,16,23. — 24) auffassen.